जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत

कृषि विकास – प्रशिक्षण मॉड्यूल कमांक – 01

आवश्यकता

देश के हृदयस्थल में स्थित मध्यप्रदेश राज्य एक समय प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध था। समय के साथ देश के साथ ही प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों जल , जंगल , जमीन का दोहन बढ़ता गया । विडंबना यह रही कि दोहन के साथ ही इन संसाधनों के व्यवस्थित प्रबंधन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया , जिसके परिणाम स्वरूप इन संसाधनों का ह्रास बढ़ता गया व प्रदेश में पीने की पानी की समस्या , पशुओं के चारे की समस्या , लोगों को जलाउ ईंधन की समस्या व कृषि की सिंचाई के लिए पानी की कमी व अन्य समस्यायें बढ़ती गई ।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा इस समस्या को गंभीरता से लेते हुये 20 अगस्त 1994 से राज्य में राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन की शुरूआत की गई । मिशन के द्वारा प्रदेश में किए गए कार्यों के अवलोकन से यह बात उभरकर आई है कि इस कार्यक्रम से पूर्व से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को इस कार्यक्रम की तकनीकी व कार्यप्रणाली की जानकारी तो है किन्तु उन्हें भूमि एवं जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण के फलस्वरूप संग्रहित जल व मृदा संरक्षण से कृषि तकनीकों का उपयोग कर कृषि उत्पादन बढ़ाने के संबंध में पर्याप्त जानकारी नहीं है, जिससे कार्यक्रम से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं । इस कमी को दूर करने हेतु उपरोक्त विषय पर प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है

उद्देश्य

प्रशिक्षण से प्रतिभागी उन्नत कृषि तकनीकों से अवगत हो सकेंगे व क्षेत्रीय स्तर में इस ज्ञान का उपयोग कर कृषि आय बढ़ाने में मददगार होंगे ।

प्रतिभागी

राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन से जुड़े टीम लीडर/टीममैम्बर/अन्य संबंधित अधिकारी

विषयवस्तु

- उन्नत कृषि तकनीक का महत्व ।
- भूमि की तैयारी (फील्ड प्रिपरेशन)
- मृदा , मृदा के प्रकार , भूमि का कटाव व संरक्षण स्वाईल स्ट्रक्चर , स्वाईल टैक्सचर , स्वाईल ट्रीटमेट

- मिट्टी का परीक्षण (स्वाइल सेंपलिंग एण्ड टेस्टिंग)
- बीज , बीज बैंक , बीज परिवर्तन , बीज की प्रजातियां
- बीज उपचार
- बुवाई की विधियां
- न्यूट्रीऐंट मैनेजमेंट
- कॉपिंग सिस्टम एण्ड कॉपिंग पैटर्न , इंटरकल्चर
- कॉप प्रोटैक्सन एण्ड इटस मेथड, डिसीज एण्ड पेस्ट मेनेजमेण्ट
- इन्सेक्ट मेनेजमेंट
- डिमांस्ट्रेशन की विधियां
- फसल की कटाई भंडारण एवं मार्केटिंग

प्रशिक्षण पद्धति

प्रशिक्षण सहभागी पद्धति से होगा । प्रतिभागियों को अपने विचार व्यक्त करने व आपस में विचार विमर्श का पर्याप्त अवसर होगा प्रतिभागियों को कक्षागत प्रशिक्षण के साथ ही क्षेत्र में जाकर अभ्यास करने का पर्याप्त अवसर होगा ।

प्रशिक्षण अवधि – तीन दिवसीय

रिर्सार्स पर्सन

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय व कृषि विकास एवं प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र, जबलपुर के संबंधित विषय विशेषज्ञ का उपयोग प्रशिक्षण में किया जावेगा ।

जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन कार्यक्रम अंतर्गत

कृषि विकास मॉड्यूल

दिवस / समय	विषय	विषयवस्तु	प्रशिक्षण विधि
प्रथम दिवस	**पंजीयन, पृष्ठभूमि, उद्घाटन**		
प्रथम कालखण्ड	भूमि की तैयारी (विलेज)		
द्वितीय कालखण्ड	मिट्टी के प्रकार , भूमि क्षरण के प्रकार व संरक्षण	मिट्टी, मिट्टी के प्रकार, भूमिक्षरण, प्रकार व संरक्षण के उपाय स्वाइल स्ट्रक्चर, स्वाइल टेक्सचर, स्वाइल ट्रीटमेंट	
तृतीय कालखण्ड	मिट्टी परीक्षण	स्वाइल सेम्पलिंग एवं टेस्टिंग	डिमोस्ट्रेशन
चतुर्थ कालखण्ड	बीज, बीज बैंक, बीज का बदलाव व बीज की प्रजातियां		
द्वितीय दिवस	**विगत दिवस का पुनरावलोकन**		
प्रथम कालखण्ड	बीज उपचार		डिमोस्ट्रेशन
द्वितीय कालखण्ड	बीज की बुवाई की विधियां		
तृतीय कालखण्ड	न्यूट्रियेंट मेनेजमेंट	फर्टिलाइजर, डोजेज एण्ड मेन्योर, 1. एफवायएम 2. ग्रीन मेन्योर, 3. कम्पोस्ट 4. वर्मी कम्पोस्ट 5. बायोफर्टिलाइजर्स	
चतुर्थ कालखण्ड	फसल पद्धति और फसल पैटर्न	फसल पद्धति और फसल पैटर्न, इन्टर कल्चर	
तृतीय दिवस	**विगत दिवस का पुनरावलोकन**		
प्रथम कालखण्ड	कॉप प्रोटेक्सन एण्ड इट्स मेथड, डिसीज एण्ड पेस्ट मेनेजमेंट		
द्वितीय कालखण्ड	इन्सेक्ट मेनेजमेंट		
तृतीय कालखण्ड	निदर्धन पद्धतियां		डिमोस्ट्रेशन
चतुर्थ कालखण्ड	फसल की कटाई , भंडारण , मार्केटिंग		